श्रीवाल्मीकि मुनि कहते हैं कि जिनके बाँयें भागमें सीताजी, सामने हनुमान, पीछे लक्ष्मण, दोनों बगल शत्रुघ्न और भरत, वायव्य ईशान अग्नि तथा नैर्ऋत्यकोणमें क्रमशः सुग्रीव, विभीषण, तारापुत्र युवराज अङ्गद और जाम्बवान् हैं, उनके बीच विराजमान श्याम कमलसदृश मनोहर कान्तिवाले परम पुरुषोत्तम भगवान् श्रीरामचन्द्रजीका मैं भजन करता हूँ ॥ १ ॥

इस ग्रन्थके सारकांडमें ऋषिवाक्यसे दुष्ट रावणका हनन, दूसरे यात्राकांड में सीताके साथ रामकी तीर्थयात्रा, तीसरे यागकांडमें अयोध्यामें दस अश्वमेध यज्ञ, चौथे विलासकांडमें पत्नीके साथ विलास, पाँचवें जन्मकांडमें लव-कुशकी उत्पत्ति तथा सीताकी पुनः स्वीकृति, छठें विवाहकांडमें लवकुशके विवाह के लिए प्रस्थान, सातवें राज्यकांडमें धर्मपूर्वक पृथ्वीका रक्षण, आठवें मनोहरकांडमें रामकी पूजा आदिका वर्णन और नवें पूर्णकांड में सीतासहित भगवान रामचन्द्रके स्वधाम पधारने आदिका सुन्दर चरित्र वर्णित है ॥ २ ॥

एक समय रामचन्द्रजीकी भक्ति में तत्पर देवी पार्वतीने कहा - हे शम्भो ! आपने बहुत से पुराणोंकी सुन्दर कथा मुझे सुनायी । हे देव ! अब आप कृपा करके मेरी प्रीति बढ़ानेवाले रघुवीर श्रीरामचन्द्रजी के आनन्ददायक कर्म और उनके जन्म आदिकी मनोहर कथा सुनाइये ॥ ३-५ ।।

शिवजी बोले- हे कान्ते ! तुमने श्रीरामचन्द्रजीका कथाविषयक बड़ा अच्छा प्रश्न किया है। मैं उस मङ्गलकारिणी कथाको विस्तारपूर्वक कहता हूँ ॥ ६ ॥

आदि नारायण विष्णुसे ब्रह्माजी जायमान हुए । ब्रह्मासे मरीचि, मरीचिसे कश्यप, कश्यपसे सूर्य और सूर्यसे श्राद्धदेव हुए ॥७-८॥

उन्हींको वैवस्वत मनु भी कहते हैं। उनके बड़े प्रतापी इक्ष्वाकु, इक्ष्वाकुसे विकुक्षि अथवा शशाद और विकुक्षिके ककुत्स्थ अर्थात् पुरञ्जय हुए। ककुत्स्थसे इन्द्रवाह, इन्द्रवाहसे अनेना, अनेनासे विश्वरन्धि, विश्वरन्धिसे चन्द्र और चन्द्रका युवनाश्व नामक प्रतापी पुत्र हुआ। युवनाश्वसे शावस्त, शावस्तसे बृहदश्व तथा बृहदश्वसे कुवलयाश्व सर्वश्रेष्ठ राजा हुए। कुवलयाश्वसे दृढाश्व, दृढाश्वसे हर्यश्व, हर्यश्वसे निकुम्भ, निकुम्भसे बर्हणाश्व, बर्हणाश्वसे कृताश्व, कृताश्वसे श्येनजित्, श्येनजित्से युवनाश्व, युवनाश्वसे मांधाता हुए। जो संसार में त्रसद्दस्यु नामसे प्रसिद्ध थे। मांधाता पुरुकुत्स, पुरुकुत्ससे फिर दूसरे त्रसद्दस्यु हुए । त्रसद्दस्युसे अनरण्य, अनरण्य से हर्यश्व, हर्यश्वसे अरुण, अरुणसे त्रिबन्धन, त्रिबन्धनसे सत्यव्रत हुए। उनका नाम त्रिशंकु भी था ।। ९- १७ ॥

सत्यव्रतसे हरिश्चन्द्र नाम के बड़े सत्यवादी और प्रतापी राजा हुए। हरिश्चन्द्रसे रोहित, रोहितसे हरित, हरितसे चंप, चंपसे सुदेव, सुदेव से विजय, विजय से भरुक, भरुकसे वृक, वृकसे बाहुक, बाहुकसे सगर, सगरसे असमञ्जस, असमञ्जससे अंशुमान, अंशुमान से दिलीप, दिलीपसे भगीरथ, भगीरथसे श्रुत, श्रुतसे नाभ, नाभसे सिन्धुद्वीप, सिन्धुद्वीपसे अयुतायु, अयुतायुसे ऋतुपर्ण और ऋतुपर्णसे सुदास हुए । वे भित्रसह और कल्माषांघ्रि नामसे भी प्रसिद्ध थे ।। १८- २३ ॥

सुदाससे अश्मक, अश्मकसे मूलक, मूलकसे नारीकवच, नारीकवचसे दशरथ,दशरथसे ऐडविड, ऐडविडसे विश्वसह, विश्वसहसे खट्वाङ्ग, खट्वाङ्गसे दीर्घबाहु हुए। उन्हीं का नाम दिलीप भी था । दिलीपसे रघु,

रघुसे अज और अजसे बड़े प्रतापी महाराज दशरथ हुए। दशरथसे साक्षात् परमेश्वर मर्यादापुषोत्तम भगवान् श्रीरामचन्द्रजी जायमान हुए ।। २४-२७ ।।

उनके अनन्त नाम हैं। जिनको मुनिलोग सदा गाया करते हैं। विष्णुसे लेकर ६१ (इकसठ) राजे मैंने गिनाये। उन राजाओंके बाद श्रीरामचन्द्रजी प्रकट हुए। उनका चरित्र मैं तुमको संक्षेपमें बताता हूँ ॥ २८ ॥ २९ ॥

इक्ष्वाकुकुलमें श्रेष्ठ, लोगों में प्रसिद्ध, बलवान् क्षत्रिय, सरयू नदीके किनारे बसी हुई अयोध्या नगरीके राजा, जम्बूद्वीपके स्वामी, बड़े भारी श्रीमान् राजा दशरथ विशाल सेना रखकर धर्म तथा न्यायपूर्वक राज्यका शासन करते थे ।। ३०-३१ ।।

अयोध्याके पास ही कोसलदेशकी कोसलपुरीमें कोसल नामका एक बड़ा पुण्यात्मा राजा राज्य करता था ॥ ३२ ॥

उसकी विवाहके योग्य एक सुन्दरी कौसल्या नामकी पुत्री थी । उसका उसके पिता कोसलने दशरथ के साथ विवाह निश्चित किया । बादमें आनन्दके साथ विवाहके दिनका निश्चय करके उन्होंने लग्नके निमित्त राजा दशरथको बुलानेके लिए दूतोंको भेजा ।। ३३ ।। ३४ ।।

उस समय राजा दशरथ सरयूनदीके बीच नौकापर बैठकर इष्टमित्रों तथा मन्त्रियोंके साथ जलक्रीड़ा कर रहे थे। रात्रिका समय था, चारों ओर सैनिक खड़े थे, चारणगण स्तुति कर रहे थे और रत्नोंके दीपके प्रकाशसे समस्त नाव जगमगा रही थी। वाराङ्गनायें नानाप्रकारके नृत्य-गान कर रही थीं ।। ३५-३६ ।।

उसी समय लङ्काके राजा रावणने ब्रह्मा से पूछा - हे ब्रह्मन् ! मेरा किसके हाथों मरण होगा ? यह आप स्पष्ट कहिये ॥ ३७ ॥

रावणका वचन सुनकर ब्रह्मा ने कहा कि दशरथकी स्त्री कौसल्यासे साक्षात् जनार्दन भगवान् श्रीरामजी आदि चार पुत्रोंके रूपमें उत्पन्न होंगे। उनमेंसे राम तुमको मारेंगे । कोसलराजने ब्राह्मणोंसे पूछकर राजा दशरथके लग्नका आजसे पाँचवाँ दिन निश्चित किया है। ब्रह्माका यह वचन सुना तो रावण बहुतसे राक्षसोंको साथ लेकर शीघ्र अयोध्या नगरीको चल पड़ा। वहाँ जा और घोर युद्ध करके उसने नौकापर बैठे राजा दशरथको पराजित किया और पादप्रहारसे नावको तोड़कर सरयूके जलमें डुबो दिया । उस समय और सब तो जलमें डूबकर मर गये । परन्तु राजा दशरथ तथा सुमन्त्र नामका मन्त्री दैवेच्छासे नाव के टुकड़ोंपर बैठकर धीरे-धीरे जलप्रवाहके सहारे गंगानदीमें जा पहुँचे ।। ३८-४३ ।।

वहाँ बहते हुए वे दोनों समुद्रमें जा मिले। उधर रावण अयोध्यासे चलकर कोसलनगरी में जा पहुँचा और भयानक युद्ध करके राजा कोसलको जीत लिया। तदनन्तर कौसल्याका हरण करके वह आनन्दके साथ आकाशमार्गसे लङ्काको चला ॥ ४४-४५।।

रास्तेमें क्षार समुद्रमें रहनेवाली तिमिङ्गिल मछलीको देखकर उसने सोचा कि सब देवता मेरे शत्रु हैं । कहीं रूप बदलकर वे लङ्कासे कौसल्याको चुरा न ले जायें । इसीलिये इसको यहीं इस तिमिङ्गिलको धरोहररूपमें सौंप दूँ तो ठीक हो ॥ ४६-४७ ॥

ऐसा सोचकर उसने कौसल्याको पिटारी में बन्द करके तिमिङ्गिल मछलीको सौंप दिया और स्वयं आनन्द के साथ लङ्को चला गया ॥ ४८ ॥

वह मछली उस पिटारीको मुखमें लेकर सुखपूर्वक समुद्र में घूमने लगी। सहसा अपने शत्रुको सामने देखकर उसने शत्रुके साथ युद्ध करनेका निश्चय किया ।। ४९ ।।

तदनुसार पिटारीको एक टापूपर रखकर वह शत्रुसे युद्ध करने लगी। उसी समय वह नावका टुकड़ा भी उसी टापूके किनारे आ लगा ॥५०॥

तब राजा दशरथ तथा सुमन्त्र उसी द्वीपमें उतर पड़े। वहाँ उनकी दृष्टि उस पिटारीपर पड़ी। खोलकर देखने पर उसमें कौसल्याको देखकर उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ ।। ५१ ।।

बाद में एक दूसरेसे सब बातोंको जान करके प्रसन्न हुए और अच्छे मुहूर्त में वहींपर राजा दशरथने प्रसन्नतापूर्वक कौसल्या के साथ गांधर्व विवाह कर लिया । पश्चात् राजा, कौसल्या तथा मन्त्रियों में श्रेष्ठ मन्त्री सुमन्त्र ये तीनों पुनः पिटारीमें घुस गये और ढकना बन्द कर लिया। मछलीने भी शत्रुको जीतकर उस सन्दूकको फिर अपने मुखमें रख लिया ।। ५२-५४ ॥

उधर लङ्कामें रावण सुखपूर्वक सभाके बीचमें बैठा और ब्रह्माजीको बुलाकर हँसते हुए बोला-॥ ५५ ॥

हे ब्रह्मन् ! मैंने आपके वचनको भी झूठा कर डाला । दशरथको जलमें डुबोकर कौसल्याको छुपा दिया ॥ ५६ ॥

भरी सभामें रावणके इस वचनको सुनकर ब्रह्माने जोरसे स्पष्ट शब्दोंमें "ॐ पुण्याहम् " ऐसा कहा ॥ ५७ ॥

यह सुनकर रावणने पूछा कि यह आपने क्या कहा? ब्रह्माजी बोले- अरे ! राजा दशरथका विवाह हो गया ॥ ५८ ॥

रावण ब्रह्मा के वचनको असत्य प्रमाणित करनेके लिये दूतों द्वारा मछली से पेटी मँगवायी और ज्यों ही खोलकर ब्रह्माजीको दिखलाना चाहा, त्यों ही उसमें सुमंत्रके साथ दशरथ कौसल्याको देखकर पहले तो बहुत चकित हुआ । फिर क्रुद्ध होकर उन्हें मारनेके लिये उसने तलवार निकाल ली ।। ५९-६० ।।

तब ब्रह्माने रावणको रोककर कहा - अरे दशवदन ! यह क्या करता है ? इस समय ऐसा साहस मत कर ॥ ६१ ॥

देख,तूने केवल कौसल्याको ही इसमें रक्खा था । किन्तु ये एकसे एक तीन हो गये। वैसे ही इन तीनोंसे करोड़ों हो जायँगे ॥ ६२ ॥

राम भी आज ही जन्म ले लेंगे और तू मारा जायगा । आयु शेष रहते क्यों व्यर्थ मरना चाहता है ? इसलिये तू ऐसा साहस त्याग दे ॥ ६३ ॥

जो होनी होगा सो आगे होगी । अभी तू कुछ मत कर और इन तीनों को दूत द्वारा इनके स्थानको भेजवाकर सुखी हो ॥ ६४ ॥

मेरी बात कभी झूठ न होगी इस बातका निश्चय रख। क्योंकि, कर्मकी गति बड़ी गहन होती है। कर्मके अनुसार जो होनेवाला होता है, सो होकर ही रहता है ।। ६५ ।।

इस घटनाको घटित होते देखकर रावण कुछ डर गया और ब्रह्माजीकी बातको सच्ची मानकर वह पिटारी अपने दूतों द्वारा शीघ्र अयोध्या भेज दी ।। ६६ ।।

राजा दशरथ आदिको सकुशल आया देखकर अयोध्यावासियों तथा कोसलदेशके राजा आदिको बड़ी प्रसन्नता हुई और आश्चर्य भी हुआ। बाद में कोसलाधिपतिने बड़े समारोहके साथ फिरसे विवाह करके अपनी कमनीय कन्या कौसल्या तथा अपना संपूर्ण राज्य अपने दामाद राजा दशरथको दहेजरूपमें दे दिया । तबसे कोसलदेश के राजे भी सूर्यवंशी कहलाने लगे ।। ६७--६९ ।।

तदनन्तर राजा दशरथने मगधदेशके राजाकी कन्या सुमित्राको ब्याहकर अपनी दूसरी प्राणप्रिया स्त्री बनायी ॥ ७० ॥

केकय देशके राजाकी कमलनयनी कन्या कैकेयीको ब्याहकर उन्होंने बड़े आदरपूर्वक तीसरी पत्नी बनायी ।। ७१ ।।

इन तीनोंके अतिरिक्त अन्य भी उनकी सात सौ स्त्रियां थी । इस प्रकार आनन्दपूर्वक राजा दशरथ दान-मान-भोग-ऐश्वर्य आदिके द्वारा पृथ्वीका शासन करते हुए वृद्ध हो गये । परन्तु उन परम धार्मिक राजा दशरथको कोई सन्तान नहीं हुई ॥ ७२ ॥ ७३ ॥

हे प्रिये पार्वती ! पुत्रके बिना राजाको रूपयौवन युक्त मनोज्ञ कौसल्या, कैकेयी तथा सुमित्रा आदि स्त्रियां , राज्य और विशाल अयोध्यापुरी सूनी तथा व्यर्थ दीखने लगी । उसी समय देवताओं और दानवोंमें राज्य- के लिए बड़ा भारी युद्ध आरम्भ हो गया ।। ७४ ।। ७५ ।।

उस युद्धमें यह आकाशवाणी हुई कि 'जिसके पक्ष में अयोध्यापति राजा दशरथ होंगे, उसी पक्षकी विजय होगी'। उस वाणीको सुनकर पवनदेवने शीघ्र जाकर राजा दशरथसे युद्ध में सम्मिलित होनेका सादर प्रार्थना की। तदनुसार राजा दशरथ वहाँ जाकर दानवोंसे घोर युद्ध करने लगे ।। ७६-७७ ।।

उस भयानक संग्राम के समय राजाके रथका धुरा टूट गया, किन्तु दैववश राजाका पता नहीं लगा। ७८ ।।

राजाके पास बैठी सुन्दर भौंहोंवाली रानी कैकयी संग्रामका कौतुक देख रही थी। उसने सहसा रणमें अपने रथका धुरा टूटते देख लिया ॥ ७९ ॥

तत्काल उसने विजय लाभके लिए अपने बायें हाथको धुरेकी जगह लगा दिया। बचपन में कैकेयीने किसी सोते हुए मुनिका मुँह स्याही से काला कर दिया था। तब मुनिने उसे शाप दे दिया कि जा, तेरा मुँह भी अपयशके कारण ऐसा काला होगा कि कोई देखना नहीं चाहेगा ।। ८०-८१ ।।

जब मुनि वहाँसे चलने लगे, तब कैकेयी ने भक्तिपूर्वक बायें हाथ से उनका दण्ड-कमण्डल उन्हें दे दिया ।। ८२ ।।

इस सेवा से प्रसन्न होकर मुनिने उसे वरदान दिया कि जा, तेरा बायाँ हाथ समय पड़नेपर वज्र जैसा कठोर हो जायगा और किसी तरह घायल न होगा । ८३ ।।

कैकेयीने उस वरका स्मरण करके ही अपने हाथको धुरेके सदृश बनाकर रथ में लगा दिया था। रणमें दैत्यों को जीतने के बाद राजा दशरथने इस साहस भरे कार्यको देखकर प्रसन्नतापूर्वक उससे दो वर मांगने के लिए कहा। उसने भी उन दोनों वरोंको राजाके पास ही धरोहररूपमें रख दिया और कहा कि जब में माँगूँ, तब आप ये दो वर मुझे दे दीजियेगा ।। ८४-८५ ।।

'बहुत अच्छा' कहकर राजा अपनी स्त्रीके साथ अयोध्या लौट आये एक दिन रात्रिके समय राजा दशरथ शिकार खेलने के लिये सरयूके किनारे गहन वनमें जा पहुँचे । वहाँ उन्होंने बाणोंकी वर्षा करके नदीका जलप्रवाह रोक दिया और बहुतसे वनपशुओंको मारा। उसी समय श्रवण अपने बूढ़े तथा अंधे माता-पिताको काँवर में बिठाकर काँधे पर उठाये हुए उस वन्य मार्गसे काशी ले जा रहा था । तभी गर्मी से पीड़ित होकर वृद्ध माता-पिताने अपने पुत्रसे जल पिलानेको कहा। उनकी आज्ञा पाते ही श्रवण काँवरको जलके किनारे रख तथा घड़ेको टेढ़ा करके जल भरने लगा तो उस घड़ेसे हाथीके शब्द जैसा शब्द निकला । ८६ - ९० ।।

'बनैले हाथीको नहीं मारना चाहिये' इस बातको जानते हुए भी राजा दशरथने उस वैश्य श्रवणको हाथीके भ्रमसे शब्दवेधी बाण मारकर बींध दिया ।। ९१ ।।

'हाय ! मुझ निरपराधको किसने मारा' ऐसा चिल्लाकर श्रवण धड़ामसे जल में गिर पड़ा । मनुष्यकी बोली सुनकर राजा दशरथ घबड़ा उठे और दौड़कर वहाँ गये । उसको जल-से बाहर निकालकर उसके मुँह से सब वृत्तान्त सुना तो भयसे काँपते हुए राजाने उस वैश्य बालकके शरीर से बाण निकाला ।। ९२-९३ ।।

राजाके मुखसे पुत्रमरणकी बात सुनकर वे दोनों अंधे अतिशय विलाप करने लगे और राजासे चिता वनवाकर पुत्रके साथ जलकर परलोक सिधार गये । मरते समय पुत्रवियोगसे दुःखित वे दोनों अंधी-अन्धे

राजा दशरथको यह शाप देते गये कि 'जैसे हम दोनों पुत्रशोक से मर रहे हैं, वैसे ही तुम भी पुत्रशोकसे ही मरोगे' ।। ९४-९५ ।।

राजाने नगर में आकर यह सब हाल गुरु- वसिष्ठजीको सुनाया। कुछ दिनों बाद वसिष्टजीने राजाकी दोषनिवृत्ति तथा पुत्रप्राप्ति के लिए उनसे सरयूके किनारे ऋष्यशृङ्गको बुलवाकर अश्वमेध यज्ञ करवाया। राजा दशरथके मित्र अंगदेशके राजा रोमपादने अपनी शान्ता नामकी कन्या ऋष्यशृङ्गको दे दी थी । क्योंकि एक बार राजा रोमपादने देशमें वर्षा न होने तथा उन्हें कोई पुत्र न होनेके कारण मन्त्रियोंके कथनानुसार ऋष्यशृङ्गके पिता विभांडकके आश्रमसे वेश्याओंके द्वारा मोहित करवाकर उन्हें अपने देश में बुलवाया । वेश्यायें वनमें गयीं ओर नाचकर, गाना गाकर, बाजे बजाकर, हावभाव, आलिङ्गन तथा पूजा आदिके द्वारा मोहित करके ऋष्यशृङ्गको ले आयीं । उनके यज्ञ करानेसे राज्य में वृष्टि हुई और राजाको पुत्र भी प्राप्त हुआ ॥ ९६-१००॥

तव प्रसन्न होकर राजा रोमपादने ऋष्यशृङ्गको अपनी शान्ता नामकी कन्या दान करके दे दी । अतएव दशरथ भी उन ऋष्यशृङ्गको अपने नगर में ले आये ।। १०१ ।।

उन मुनिने संतान रहित राजा दशरथसे इष्टि (यज्ञ) करवाकर खीर लिये हुए अग्निदेवको यज्ञकुण्डसे प्रत्यक्ष प्रकट किया ॥ १०२ ॥

इस प्रकार अग्निने स्वयं प्रकट होकर राजाको सुन्दर पुत्र देनेवाला पायस (खीर) दिया । राजाने वह खीर लेकर तीनों स्त्रियोंमें बाँट दी। तभी कैकेयी के भागको एक गृध्री यह सोचकर कि यदि इसको मैं ले जाऊँगी तो मेरा शाप छूट जायगा । इस स्वार्थसे खीर छीन ले गयी । कथान्तर । एक समय सुवर्चा नामकी अप्सराओंमें उत्तम अप्सराको नृत्यभङ्गके अपराध से ब्रहमाने गृध्री होनेका शाप दे दिया। जब फिर उसने स्तुतिके द्वारा ब्रहमाको प्रसन्न किया । तव ब्रहमाजीने कहा कि जब तुम कैकेयीके पायसको छीनकर अंजनिपर्वतपर फेंकोगी। तब तुम्हारी पुनः सुगति हो जायगी और पूर्ववत् तुम अप्सरा हो जाओगी ॥ १०३-१०६ ॥

इसी कारण उस गृध्रीने खीर लेकर अंजनिगिरिपर डाल दी। जिससे वह अपने अप्सरा- रूपको प्राप्त होकर पुनः स्वर्ग चली गयी॥१०७ ॥

बादमें कौसल्या तथा सुमित्राने अपने-अपने भागमें से थोड़ा-थोड़ा पायस कैकेयीको दे दिया । इस प्रकार सबने पायस खाया और सबने गर्भ धारण किया ।। १०८ ॥

भावी पुत्रोत्पत्तिके गर्भचिहनों को देख तथा सुनकर होनहार पुत्रोंके द्वारा किये जानेवाले अद्भुत कार्योंको लोग पहले ही समझ गये ।। १०९ ।।

इति श्रीशतकोटिरामचरितांतर्गते श्रीमदानन्दरामायणे वाल्मीकीये सारकाण्डे भाषाटीकायां प्रथमः सर्गः ॥ १ ॥